बंजारा समाज की रहन-सहन : परंपरा, संघर्ष और परिवर्तन का समाजशास्त्रीय अध्ययन

राठोड अजय
शोधार्थी पीएच.डी (हिंदी)
मानविकी संकाय ,हिंदी विभाग , केन्द्रीय विश्वविद्यालय हैदराबाद
rajay851@gmail.com, 9494388658,8328055970

शोध सार
बंजारा समाज भारत का एक प्राचीन घुमंतू समुदाय है, जिसकी विशिष्ट पहचान उसकी रहन-सहन, वेश-भूषा, खान-पान और सामाजिक जीवन में दिखाई देती है। यह समाज ऐतिहासिक रूप से व्यापार और पशुपालन से जुड़ा रहा है। प्रस्तुत आलेख में बंजारा समाज की पारंपरिक जीवन-शैली, सांस्कृतिक विशेषताओं तथा आधुनिक परिवर्तन के प्रभावों का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि बंजारा समाज परंपरा और आधुनिकता के बीच संतुलन बनाते हुए अपनी सांस्कृतिक अस्मिता को बनाए रखने का प्रयास कर रहा है।

बीज शब्द : बंजारा समाज, रहन-सहन, टांडा, लोकसंस्कृति, परिवर्तन

प्रस्तावना
भारतीय समाज बहुस्तरीय और बहुरंगी सामाजिक संरचना से निर्मित है। इस संरचना में बंजारा समाज एक विशिष्ट स्थान रखता है। बंजारा समाज को प्रायः घुमंतू, अर्ध-घुमंतू अथवा वनवासी समुदाय के रूप में जाना जाता है। ऐतिहासिक दृष्टि से यह समाज व्यापार, पशुपालन और वस्तुओं के परिवहन से जुड़ा रहा है। मध्यकाल में जब परिवहन के आधुनिक साधन उपलब्ध नहीं थे, तब बंजारा समाज देश के विभिन्न भागों में अनाज, नमक और अन्य आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति करता था। बंजारा समाज की रहन-सहन केवल जीवन-निर्वाह की पद्धति नहीं है, बल्कि वह उनके सामाजिक मूल्यों, सांस्कृतिक चेतना, सामूहिक जीवन-दृष्टि और प्रकृति से गहरे संबंध को अभिव्यक्त करती है। प्रस्तुत आलेख में बंजारा समाज की रहन-सहन के विविध पक्षों निवास, वेश-भूषा, खान-पान, सामाजिक जीवन, सांस्कृतिक परंपराएँ तथा आधुनिक परिवर्तन का विस्तृत विश्लेषण किया गया है।

ऐतिहासिक-पृष्ठभूमि
बंजारा समाज का इतिहास अत्यंत प्राचीन माना जाता है। विभिन्न ऐतिहासिक स्रोतों के अनुसार यह समाज उत्तर भारत से लेकर दक्कन और दक्षिण भारत तक फैला हुआ है। व्यापारिक मार्गों पर उनकी उपस्थिति ने उन्हें आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण बनाया। मुगल काल और उसके बाद भी बंजारा समाज की भूमिका अनाज और सैन्य सामग्री के परिवहन में उल्लेखनीय रही। ब्रिटिश शासन के दौरान परिवहन के नए साधनों के विकास से बंजारा समाज का पारंपरिक व्यवसाय प्रभावित हुआ, जिसके परिणामस्वरूप उन्हें आर्थिक और सामाजिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। यही कारण है कि उनकी रहन-सहन में धीरे-धीरे परिवर्तन आने लगा।

निवास व्यवस्था (रहन)
बंजारा समाज की पारंपरिक निवास व्यवस्था को 'टांडा' कहा जाता है। टांडा केवल आवासीय स्थान नहीं, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक और प्रशासनिक इकाई भी है। परंपरागत रूप से बंजारा लोग अस्थायी निवास करते थे। उनके घर मिट्टी, बाँस, लकड़ी और घास-फूस से बनाए जाते थे। घरों की संरचना साधारण होती थी, परंतु सामूहिकता और परस्पर सहयोग की भावना अत्यंत प्रबल रहती थी।वर्तमान समय में कई बंजारा परिवार स्थायी रूप से बस गए हैं। अब पक्के मकान, बिजली, पानी और सड़क जैसी सुविधाएँ धीरे-धीरे उपलब्ध हो रही हैं, फिर भी टांडा की सामाजिक संरचना आज भी उनकी पहचान बनाए हुए है। एक प्रसिद्ध विद्वान और उस्मानिया विश्वविद्यालय के हिंदी प्रोफेसर थे, जिन्होंने भारत के खानाबदोश बंजारा समुदाय पर गहरा शोध किया और "बंजारा समाज" नामक एक महत्वपूर्ण पुस्तक लिखी, जो बंजारा संस्कृति, भाषा, व्यवसाय और जीवनशैली का विस्तृत वर्णन करती है, जिसमें उन्होंने पूरे भारत के बंजारा टांडों (बस्तियों) का अध्ययन किया और उनके इतिहास को पहली बार 1982 में प्रकाशित किया।

वेश-भूषा(सहन)
बंजारा समाज की वेश-भूषा उनकी सांस्कृतिक पहचान का सबसे सशक्त माध्यम है।बंजारा महिलाएँ रंग-बिरंगे घाघरे, शीशा-कढ़ाई वाले वस्त्र और भारी चाँदी के आभूषण पहनती हैं। उनके आभूषण हार, कड़े, नथ, पायल न केवल सौंदर्य का प्रतीक हैं, बल्कि सामाजिक प्रतिष्ठा और पारिवारिक समृद्धि के संकेतक भी हैं। पुरुषों की वेश-भूषा अपेक्षाकृत सादी होती है। वे धोती, कुर्ता और सिर पर पगड़ी पहनते हैं। उनकी पोशाक श्रमशील जीवन और आत्मसम्मान को दर्शाती है। आधुनिक प्रभाव के कारण आज युवा वर्ग आधुनिक कपड़ों की ओर भी आकर्षित हो रहा है, परंतु पारंपरिक वेश-भूषा अब भी सांस्कृतिक अवसरों पर अनिवार्य मानी जाती है।

खान-पान
बंजारा समाज का खान-पान उनके श्रमसाध्य जीवन और स्थानीय संसाधनों पर आधारित होता है। ज्वार, बाजरा, मक्का जैसे मोटे अनाज उनके भोजन का मुख्य आधार हैं। इसके अतिरिक्त दालें, सब्जियाँ और दुग्ध-उत्पाद भी प्रयुक्त होते हैं। कई क्षेत्रों में मांसाहार प्रचलित है, विशेषकर उत्सवों और विशेष अवसरों पर। भोजन सामूहिक रूप से करने की परंपरा सामाजिक एकता को मजबूत करती है। अतिथि-सत्कार बंजारा समाज का प्रमुख गुण है; अतिथि को भोजन कराए बिना विदा करना अनुचित माना जाता है।

पारिवारिक और सामाजिक जीवन-
बंजारा समाज का पारिवारिक ढाँचा सामूहिकता पर आधारित है। संयुक्त परिवार की परंपरा यहाँ आज भी देखने को मिलती है। परिवार में बुजुर्गों का सम्मान और निर्णयों में उनकी भूमिका महत्वपूर्ण होती है। विवाह, जन्म और मृत्यु जैसे संस्कार सामूहिक रूप से संपन्न होते हैं। विवाह समारोह कई दिनों तक चलता है और इसमें नृत्य-संगीत का विशेष स्थान होता है। सामाजिक नियम और परंपराएँ समाज की एकता बनाए रखने में सहायक होती हैं।

सांस्कृतिक जीवन
बंजारा समाज की संस्कृति अत्यंत समृद्ध है। लोकगीत, लोकनृत्य और वाद्ययंत्र उनके सांस्कृतिक जीवन के प्रमुख अंग हैं। उनके गीतों में प्रेम, विरह, संघर्ष, प्रकृति और ऐतिहासिक स्मृतियाँ अभिव्यक्त होती हैं। ये गीत मौखिक परंपरा के माध्यम से पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ते हैं। नृत्य और संगीत केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि सामाजिक संवाद और सांस्कृतिक...**तीज के गीत** तीज बंजारा कुंवारी कन्याओं का सबसे बड़ा त्योहार है। इस दौरान गाए जाने वाले गीतों में भाई-बहन का प्रेम और प्रकृति की पूजा झलकती है। विषय: अच्छी फसल की कामना

और अपने परिवार की सुख-समृद्धि।नृत्य: इन गीतों के साथ लड़कियां गोल घेरा बनाकर पारंपरिक नृत्य करती हैं।लाडी गीत (विवाह के गीत) बंजारा शादियों में गीतों का विशेष महत्व है। सगाई से लेकर विदाई तक, हर रस्म के लिए अलग गीत होते हैं। विदाई के गीत: ये गीत बहुत भावुक होते हैं, जिनमें एक बेटी अपने 'टांडा' (बस्ती) और माता-पिता को छोड़ने का दुख व्यक्त करती है। **होली और फाग गीत** बंजारा समुदाय की होली बहुत प्रसिद्ध है। इसमें पुरुष और महिलाएं ढोल-नगाड़ों की थाप पर 'फाग' गाते हैं। शैली: ये गीत काफी जोश भरे और ऊर्जावान होते हैं। रमेश कार्तिक नायक बंजारा साहित्य के एक प्रमुख लेखक और युवा प्रतिभा हैं, जो अपनी तेलुगु लघु कथाओं के लिए जाने जाते हैं, विशेषकर अपने संग्रह "धवल" के लिए, जिसके लिए उन्हें साहित्य अकादमी युवा पुरस्कार 2024 मिला और वे इस सम्मान को पाने वाले पहले जनजातीय लेखक बने; वे बंजारा समुदाय के जीवन, संस्कृति और संघर्षों को अपनी रचनाओं के माध्यम से आवाज़ देते हैं, और तेलंगाना के एक महत्वपूर्ण साहित्यिक आवाज़ के रूप में उभरे हैं।

धार्मिक विश्वास और परंपराएँ

बंजारा समाज प्रकृति-पूजक प्रवृत्ति वाला समाज है। वे विभिन्न देवी-देवताओं, लोकदेवताओं और प्राकृतिक शक्तियों की पूजा करते हैं। धार्मिक अनुष्ठान सामूहिक रूप से किए जाते हैं, जिनमें समाज के सभी वर्गों की सहभागिता होती है। धर्म उनके सामाजिक जीवन को नियंत्रित करने और नैतिक मूल्यों को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

आधुनिक परिवर्तन और चुनौतियाँ

आधुनिक शिक्षा, संचार माध्यमों और सरकारी योजनाओं के प्रभाव से बंजारा समाज की रहन-सहन में उल्लेखनीय परिवर्तन आया है। अब कई बंजारा परिवार कृषि, मजदूरी, सेवा क्षेत्र और छोटे व्यवसायों से जुड़े हैं। हालाँकि आधुनिकता के प्रभाव से पारंपरिक जीवन-शैली में कुछ क्षरण हुआ है, फिर भी बंजारा समाज अपनी सांस्कृतिक पहचान को बनाए रखने के लिए प्रयासरत है। शिक्षा और जागरूकता उनके सामाजिक उत्थान के प्रमुख साधन बन रहे हैं।इसकी क्षेत्रीय बोलियाँ भी हैं। कोई लिपि न होने के कारण इसे महाराष्ट्र, कर्नाटक, तमिलनाडु, तेलंगाना और आन्ध्र प्रदेश, पंजाब में इसको वहाँ की स्थानीय लिपियों में लिखा जाता है। आज बंजारा भाषा में बड़े पैमाने पर साहित्य निर्माण हो रहा है। यह बंजारा भाषा के लिए बड़ी उपलब्धि है। "केसुला नै मोरारी। मायड भाषा बंजारा री। चाँदा सुर्यास्यूं अमरारी। जीवे जीवेस्यू प्यारी।।इस गरिमा पूर्ण रचना को बंजारा भाषा का गौरवगीत माना जाता है ; जिसकी रचना बंजारा साहित्य एवं संस्कृति के विशेषज्ञ एकनाथ पवार नायक ने की है। संविधान की आठवीं अनुसूचि में बंजारा भाषा को सम्मिलित करवाने की माँग, संसद में सांसद उमेश जाधव, सांसद सुरेश धानोरकर, पूर्व सांसद हरिसिंह राठौड़, राजीव सातव ,सांसद पी.बलराम नायक आदि ने उठाई। [3][4]

उपसंहार-निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि बंजारा समाज की रहन-सहन भारतीय समाज की सांस्कृतिक विविधता का महत्वपूर्ण आयाम है। उनका जीवन संघर्ष, सामूहिकता और आत्मसम्मान का प्रतीक है। परंपरा और आधुनिकता के बीच संतुलन बनाते हुए बंजारा समाज निरंतर आगे बढ़ रहा है। आज आवश्यकता इस बात की है कि बंजारा समाज की सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करते हुए उन्हें सामाजिक-आर्थिक विकास की मुख्यधारा से सम्मानपूर्वक जोड़ा जाए। तभी भारतीय समाज की वास्तविक समावेशी प्रकृति साकार हो सकेगी।

संदर्भ ग्रन्थ-

1).बनजारा समाज .डॉ .श्री राम बंजारा इतिहास और संस्कृति पर प्रामाणिक हिंदी ग्रन्थ ,1982
2) बंजारों का सांस्कृतिक इतिहास.डॉ. जयपाल सिंह राठोड, 2015
3)बनजारा समाज अणि राजकारण .अंकुश चौहान. समाज के आधुनिक बदलाव और राजनितिक स्थिति पर मराठी/हिंदी
4) बंजारा लोकगीतों का सांस्कृतिक अध्ययन.डॉ गनपत राठोड ,समाज के माध्यम से समाज की मान्यताओ का विश्लेषण
5) बंजारा लोक कथाए. इंद्रासिंह जाधव ,समाज की मौखिक परमपराओ और लोककथाओ का संग्रह
6) धवलो ,(विलाप का गीत, रमेश कार्तिक नायक. 2021) के लिए प्रतिष्ठित साहित्य अकादमी युवा पुरस्कार 2024 से सम्मानित किया गया, वे तेलुगु साहित्